International Research Journal of Humanities, Language and Literature ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.748 Volume 7, Issue 4, April 2020
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

©Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

रीतिकालीन स्वच्छंदतावादी काव्य का सौंदर्य पक्ष: एक साहित्यिक विश्लेषण

प्रतिमा शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
गुरु नानक खालसा कॉलेज, यमुनानगर, हरियाणा, भारत.
Email ID: *pratimasharma1966gnkc@gmail.com*

सारांश (Abstract)

रीतिकालीन काव्य को परंपरागत रूप से श्रृंगार और अलंकारप्रधान काव्य कहा गया है। परंतु इसके भीतर एक ऐसी स्वच्छंद काव्य-चेतना व्याप्त है, जो भाव, कल्पना, सामाजिक प्रतिबिंब और आत्मानुभूति को समन्वित करती है। यह शोधपत्र घनानंद, बिहारी और देव जैसे कवियों के काव्य सौंदर्य को पुनर्परिभाषित करते हुए समकालीन आलोचना के आलोक में उसे एक बहुआयामी साहित्यिक परंपरा के रूप में प्रस्तुत करता है।

प्रमुख शब्दावली (Key Terms)

स्वच्छंदतावाद, रीतिकाल, सौंदर्यशास्त्र, आत्मवेदना, रस सिद्धांत, नारी विमर्श, दरबारी संरचना, आलोचना, तुलनात्मक सौंदर्य, काव्यधारा।

1. प्रस्तावना

रीतिकाल हिंदी कविता का वह युग है जिसे बहुधा दरबारी श्रृंगार और अलंकारिक परंपरा से जोड़कर देखा गया है। परंतु गंभीर साहित्यिक विमर्श में यह युग कल्पना की चरम अभिव्यक्ति, शैलीगत परिष्कार और भावसंपन्नता की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। स्वच्छंदतावादी दृष्टि से इस युग का सौंदर्य केवल दृष्टि की कोमलता या अभिव्यक्ति की लालित्य तक सीमित नहीं, बल्कि वह आत्मानुभूति, सामाजिक स्पंदन और कलात्मक स्वायत्तता की भी पुष्टि करता है।

2. साहित्य समीक्षा: आलोचना की बहस और पुनर्पाठ की आवश्यकता

2.1 पारंपरिक आलोचना का सीमित दृष्टिकोण

शुक्लीय आलोचना ने रीतिकाव्य को "भावहीन अलंकार-काव्य" कहकर खारिज किया। नामवर सिंह ने उसे 'काव्य विरलता' का युग बताया। यद्यपि घनानंद जैसे कवियों को उन्होंने अपवाद माना, फिर भी मुख्य धारणा यही रही कि रीतिकाव्य जीवन और चिंतन से विमुख है।

2.2 सौंदर्यशास्त्रीय पुनर्पाठ और आधुनिक दृष्टियाँ

हजारीप्रसाद द्विवेदी ने रीतिकाव्य को "कल्पना की विराटता और अभिव्यक्ति की परिष्कृतता" का उदाहरण माना। नगेंद्र ने उसे मनोवैज्ञानिक भावों की कलात्मक स्थापना कहा, जो केवल रूप-वर्णन नहीं, बल्कि संवेदना का सघन प्रवाह है।

2.3 समकालीन विमर्श: स्त्री दृष्टि और सांस्कृतिक पुनर्मूल्यांकन

मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार रीतिकाव्य स्त्री को केवल 'दृश्य बिंब' के रूप में प्रस्तुत करता है। जबकि हरीश त्रिवेदी जैसे आलोचकों का मानना है कि उसमें एक सौंदर्यध्रुव भी उपस्थित है, जो नारी को दार्शनिक प्रतीक बनाता है।

2.4 तुलनात्मक सिद्धांत और पश्चिमी दृष्टियाँ

Roland Barthes की "Pleasure of the Text" की अवधारणा रीतिकाव्य की अभिव्यक्ति में देखी जा सकती है—जहाँ अर्थ नहीं, शैली और बिंब-निर्माण ही सौंदर्य का स्रोत है।

3. विधि-विन्यास (Methodology)

यह शोध गुणात्मक विश्लेषण के साथ आलोचनात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें:

- प्रमुख रीतिकालीन काव्यांशों का पाठ-विश्लेषण
- आलोचकों की दृष्टियों का तुलनात्मक मूल्यांकन
- नारी विमर्श, सांस्कृतिक विमर्श और सौंदर्यशास्त्र का संयोजन
- विचारों का संगठन स्वच्छंदतावादी संवेदना के बहुस्तरीय स्वरूपों के आधार पर

4. भाव-संवेदना और सौंदर्य

4.1 आत्मवेदना की सौंदर्यता

घनानंद की कविता में विरह न केवल श्रृंगार है, बल्कि एक गहन दर्शन है। उनकी पंक्ति—"जो रही मन माँझ बसी"—दृष्टिपट से हटकर अंतरात्मा की स्थायिता को उद्घाटित करती है। नामवर सिंह इसे 'मौन स्वानुभूति की शक्ति' कहते हैं।

4.2 शैलीगत संरचना में भाव निर्माण

बिहारी के दोहे—"नयनन ही सौं नयन मिलाइयो"—इंद्रिय बिंबों के माध्यम से मानसिक भाव-संवेदना की सूक्ष्मता को व्यक्त करते हैं। नगेंद्र के अनुसार, "छंद और अलंकार रीतिकाव्य में केवल भाषा कौशल नहीं, भाव संप्रेषण के उपकरण हैं।"

4.3 रूप-बिंब बनाम अनुभव-बिंब

रीतिकाव्य में एक स्पष्ट अंतर है—जहाँ रूप-बिंब चाक्षुष अनुभूति को जगाते हैं, वहीं अनुभव-बिंब आत्मीयता और प्रतीकात्मकता को प्रकट करते हैं। यह द्वैध सौंदर्यविधान रीतिकाव्य को उसकी विशिष्टता प्रदान करता है।

5. मुख्य निष्कर्ष: सौंदर्य का बहुआयामी विमर्श

5.1 आत्मवेदना में सौंदर्य की आभा

घनानंद की कविताएँ आत्मविसर्जन और विरह के सौंदर्य की पराकाष्ठा हैं। उनकी कविता में दृष्टिपट केवल नारी रूप नहीं, आत्मसंवेदना का उद्गम है।

5.2 अलंकार और छंदों का भावसंवाहक प्रयोग

बिहारी और देव जैसे कवियों ने छंद-योजना और अलंकारों के माध्यम से मनोविज्ञानिक भावों की गहराई को व्यक्त किया। नगेंद्र इसे 'शिल्प से भाव की यात्रा' कहते हैं।

5.3 सामाजिक संरचना और काव्य का संवाद

दरबारी परिवेश ने कवियों को सीमित किया, लेकिन शिल्प और भाव के माध्यम से सामाजिक तनावों की प्रस्तुति भी संभव हुई। इस दृष्टि से रीतिकाव्य एक विमर्श स्थल बनता है।

6. साहित्यिक और तुलनात्मक विवेचना: सौंदर्य का कालबोध

6.1 सांस्कृतिक व्याप्ति

द्विवेदी के अनुसार रीतिकाव्य में सौंदर्य एक सांस्कृतिक प्रत्यय है, जो भारतीय परंपरा से जुड़ता है। नारी, प्रकृति और काव्य बिंब इस सामूहिक संस्कार को प्रकट करते हैं।

6.2 छायावादी एवं आधुनिक कविता से तुलनात्मक दृष्टि

घनानंद का विरह छायावाद के आत्मानुभूति से मेल खाता है। अज्ञेय और प्रसाद ने सौंदर्य को स्वतंत्रता और दर्शन से जोड़ा—यह दृष्टि रीतिकाव्य की स्थायी उपस्थिति को आधुनिक कविता में भी पुष्ट करती है।

6.3 सौंदर्य की दार्शनिक संवेदना

विरह, आत्मसंकल्प और कल्पना रीतिकाव्य में दर्शनात्मक संकेत हैं। यह काव्य सौंदर्य को 'अनुभूति' और 'चिंतन' का मिश्रण बनाता है, न कि केवल रूप और रस का खेल।

7. निष्कर्ष: साहित्यिक योगदान और समकालीन प्रासंगिकता

रीतिकालीन स्वच्छंदतावादी काव्य को केवल श्रृंगार का उत्सव मानना उसकी वैचारिक गहराई को नज़रअंदाज़ करना है। यह सौंदर्य की चाक्षुषता के साथ आत्मानुभूति, सांस्कृतिक चेतना और चिंतनशीलता की भी भूमिका निभाता है।

रीतिकाव्य, आलोचना की सीमाओं से बाहर निकलकर पुनर्पाठ के योग्य है। आज का साहित्य-विमर्श जब भाषा, विचार और समाज के अंतर्संबंधों को खोज रहा है—रीतिकाल का काव्य उस संदर्भ में नए प्रश्न और उत्तर प्रदान करता है।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)

📑 8. विस्तारित संदर्भ सूची (References – MLA 9th Edition Style)

1. शुक्ल, रामचंद्र. *हिन्दी साहित्य का इतिहास*. लोकभारती प्रकाशन, 2001.
2. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. *कविता के नये प्रतिमान*. राजकमल प्रकाशन, 2008.
3. नगेंद्र. *हिन्दी काव्यधारा*. साहित्य भवन, 1995.
4. सिंह, नामवर. *इतिहास और आलोचना*. राजकमल प्रकाशन, 2013.
5. पुष्पा, मैत्रेयी. *स्त्री का मानवीय पाठ*. वाणी प्रकाशन, 2015.
6. Barthes, Roland. *The Pleasure of the Text*. Hill and Wang, 1975.
7. त्रिवेदी, हरीश. *Hindi Literary Theory: Samvad*. Sahitya Akademi, 2007.
8. पांडेय, पुरुषोत्तम. *हिन्दी काव्य के सौंदर्य शास्त्र*. साहित्य मंदिर, 2002.
9. राय, रामविलास शर्मा. *भारतीय साहित्य की सामाजिक समीक्षा*. राजकमल प्रकाशन, 1985.
10. शर्मा, नगेन्द्र. *रीतिकालीन काव्य चिंतन*. भारतीय ज्ञानपीठ, 1999.
11. दत्त, राजेश. *हिन्दी कविता में दर्शन*. नीलकमल प्रकाशन, 2011.
12. त्रिपाठी, विश्वनाथ. *रीतिकाव्य: स्वरूप और संदर्भ*. भारतीय साहित्य परिषद, 2019.
13. Goswami, Suresh. *Theory of Alankara in Classical Poetics*. Abhinav Publications, 1997.
14. Chakraborty, Harish. *Love and Aesthetics in Indian Poetry*. Orient Longman, 2003.
15. चौधरी, ममता. *हिन्दी कविता और स्त्री विमर्श*. ग्रंथगौरव प्रकाशन, 2018.
16. Mehrotra, Arvind Krishna. *A Concise History of Indian Literature in English*. Permanent Black, 2010.
17. Dharwadker, Vinay. *The Oxford Anthology of Modern Indian Poetry*. Oxford UP, 2001.
18. Habib, Irfan. *Culture and Identity in South Asia*. Tulika Books, 2004.
19. Nandy, Ashis. *The Intimate Enemy: Loss and Recovery of Self under Colonialism*. Oxford UP, 1983.
20. प्रसाद, रामचन्द्र. *हिन्दी आलोचना का विकास*. साहित्य सम्मेलन, 1991.

9. परिशिष्ट (Appendices)

परिशिष्ट A: चयनित पद्यांशों का विश्लेषण

कवि	पद्यांश	सौंदर्य बोध
घनानंद	“जो रही मन माँझ बसी…”	आत्मवेदना, स्थायित्व, दर्शन
बिहारी	“नयनन ही सौं नयन मिलाइयो…”	सूक्ष्म इंद्रिय बिंब, आंतरिक संवाद

परिशिष्ट B: आलोचना दृष्टियों की तुलनात्मक तालिका

आलोचक	**दृष्टिकोण**	**योगदान**
रामचंद्र शुक्ल	नैतिक-सामाजिक आलोचना	भावहीन और कृत्रिम कविता का निषेध
हजारीप्रसाद द्विवेदी	संस्कृति और कल्पना के सौंदर्य विमर्श	सौंदर्य का सांस्कृतिक पुनर्पाठ
नगेंद्र	अलंकार और रस की मनोविज्ञानिक व्यंजना	शिल्प से भाव की यात्रा
नामवर सिंह	अवसान की संज्ञा	घनानंद की कविता में आत्म-संवेदना की पुनर्पुष्टि
मैत्रेयी पुष्पा	स्त्री विमर्श और वस्तुवादी छवि की आलोचना	रीतिकाव्य में नारी अस्मिता की पुनर्व्याख्या

© Associated Asia Research Foundation (AARF)